International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 9, 663-665
Sep 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 4.342

मनीषा शर्मा
प्राचार्य, चोइथराम ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, इन्दौर (म.प्र.).

वंदना मालवीय
शेधार्थी, भाषा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म. प्र).

Correspondence
डॉ. मनीषा शर्मा
प्राचार्य, चोइथराम ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, इन्दौर (म.प्र.).

अधूरी यात्राएँः एक विश्लेषण

मनीषा शर्मा, वंदना मालवीय

हिन्दी साहित्य के विशिष्ट हस्ताक्षरों में शामिल डॉ. राजेन्द्र मिश्र का नाम साहित्य जगत में विशिष्ट आदर के साथ लिया जाता है। हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को इन्होंने अपने लेखन के माध्यम से उन्नत किया है। ये असाधारण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी हैं। मिश्रजी श्रेष्ठ कवि, समीक्षक, गीतकार, उपन्यासकार, नाटकार, लेखक होने के साथ श्रेष्ठ साहित्यकार भी हैं। इन्होंने नई पीढ़ी को हिन्दी साहित्य से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और वर्तमान में अनेक देशों की समस्याओं पर कार्य कर रहे हैं। 'अधूरी यात्राएँ, राजेन्द्र मिश्रजी की इकतीस कविताओं का संकलन है। जिसमें – 'जमीन ही बनी रहते', 'परिवेश के बीच', 'कतार में खड़े लोग', 'इक्कीसवीं सदी', 'आभार', 'अपनों के बीच', 'खोई हुई पहचान', 'स्नायुव्यतिक्रम', 'नया मिलन', 'एक आदमी जो मुझमें', 'अँधेरे में' आदि शामिल है।

मन में उठने वाली भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। कवि ने अपनी इन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कविताओं का सहारा लिया है। 'अधूरी यात्राएँ' मिश्रजी की कविताओं का संकलन है, जिसमें मानव जीवन को एक अधूरा सफर बताया है और कविताओं के माध्यम से अपनी आन्तरिक संवेदनाओं को व्यक्त किया है।

''अच्छा ही हुआ, अब तो तुम समझोगे
पहाड़ होकर जमीन को भूलना कैसे होता है
जमीन होकर ही समझोगे
अच्छा हुआ तुम फिर से जमीन हो गये। ''[1]

उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने उच्च वर्ग पर व्यंग्य किया है वे कहते हैं कि, मनुष्य को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए, उसे यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उसे ऊँचा उठाने में गरीबों का ही हाथ है।

''लहर बिना उठे गिरती रही
और हम उसके उठने का इंतजार करते रहे
हर आइने के पास अंधेरा हट जाने तक
रोशनी को प्यार करते रहे;
क्या पता था आईने में कोई शक्ल न थी। ''[2]

कवि ने आज के मानव की तनावपूर्ण स्थिति को बताया है, कि किस प्रकार मानव हर व्यक्ति को अपना समझने की भूल करता है। सभी पर विश्वास कर लेता है। पर वास्तविकता तो कुछ और ही है। हर व्यक्ति विश्वास के लायक नहीं होता है।

''कतार में खड़े लोगों को विश्वास है –
कतार में खड़े रहने से खुशहाली आयेगी
कतार एक दर्शन है –
इंसानियत और मूल्य है इन लोगों का
बड़ी देर तक खड़े रहे लोग
और कब तक खड़े रहते
असहाय चले गये अपने–अपने घरों को
जहां उनकी औरतें बेसब्री से
उनका इंतजार कर रही थी,
रात में बिस्तर पर साथ सोने को नहीं
बल्कि उन बच्चों के लिए –
जो अभी–अभी भूख से चिल्लाकर सो गये थे
उनमें से कुछ खुदा को प्यारे हो गये थे। ''[3]

'कतार में खड़े लोग' कविता में कवि ने आज के वातावरण पर करारा व्यंग्य किया है। साधारण मनुष्य अपने परिवार की सुख शान्ति के लिए आस लगाए कहीं भी लाइन में दीन याचक बन कर खड़ा हो जाता है और जब उसे खाली हाथ लौटना पड़ता है, तो उनका परिवार भूख प्यास से व्याकुल अपने प्राण भी त्याग देता है।

''पुत्र पूछेगा पिता से तुमने मुझे
मुझसे बिना पूछे पैदा क्यों किया
मैंने कब कहा था कि मुझे पैदा करो
और खुद मरो। ''[4]

'इक्कीसवीं सदी' कविता में मिश्रजी ने आज के कलियुगी संतान पर करारा व्यंग्य करते हुए कहा है कि, किस प्रकार आज की संतान पिता के बुढ़ापे का सहारा न बनते हुए बुढ़ापे को बोझ बना रहे हैं।

''लेकर बैठा हूँ विभाजित मन
ठहरी पदचाप
एक नदिया बह रही चुपचाप
गहराता जाता है,
सदियों का दर्द
पिघलता है बर्फ
एक चट्टान कट जाती है
जाग उठता है
रचनाकार। ''[5]

उक्त पंक्तियों के माध्यम से मिश्रजी रचनाकारों को प्रेरणा देते हुए कहते हैं, कि कवि तको रचना बनानी नहीं पड़ती है। वह तो परिस्थितियों के अनुसार चाहे सुख–दुःख को या मन शांत हो, स्वतः ही आन्तरिक संवेदनाओं को कविता के माध्यम से प्रकट कर देता है। इसके लिए किसी निश्चित समय का होना आवश्यक नहीं होता है।

''क्या इसी के लिए यात्रा हैः शायद नहीं
यात्रा है उनके लिए जिनके हम हैं
उस संसार के लिए जिसमें हम हैं,
न होकर भी सब कुछ हो जाना हैः
और फिर सदा के लिए सो जाना है। ''[6]

'अपनों के बीच' कविता के माध्यम से कवि ने जिन्दगी को एक सफ़र मानते हुए, शहीदों के जीवन को महान बताया है। वह तो अपने जीवन में किसी प्रकार की मान, शान की आस नहीं करते सचमुच इन देशभक्तों का जीवन ही सच्चे अर्थों में सार्थक है। ठीक इसके विपरीत आज का मानव अपने नाम को अधिक महत्व देता है।

''पहले गालियाँ बाँटती हैं आदमी को
और गोलियाँ उसे जानवर बना देती हैं
फिर सब खत्म हो जाता है। ''[7]

'खोई हुई पहचान' कविता में कवि ने फैशन के इस दौर में मनुष्य के स्वभाव में आए परिवर्तन की ओर समाज का ध्यान केन्द्रित किया है। किस प्रकार आज बातों–बातों में गालियाँ देना लोगों का स्वभाव बन गया है। इन गालियों ने व्यक्ति को पशु के समान बना दिया है अर्थात् देह तो मनुष्य की होती है, पर उसके कर्म पशु के समान बन गए हैं।

''एक फूल मेरी मेज पर रखकर
सारी महफिल उठ गई
और मैंने अलविदा कहते हुए विदा ली –
मैं यह जानता था यह विदा मेरी संवेदनाओं की
स्याह रात बनकर आई है,
जिसका सबेरा अब कभी नहीं होगा –
वर्तमान एक भविष्य को जन्म दे रहा था
भविष्य एक वर्तमान होने को मर रहा था
और मैं इन दोनों के बीच
कभी जन्म ले रहा था
कभी मर रहा था। ''[8]

उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने एक साधारण मनुष्य की समस्या को उजागर किया है। किस प्रकार सेवानिवृत्त मनुष्य को अपना भविष्य मृतप्रायः लगने लगता है।

''अब रीतिकालीन नायिका की तरह
अभिसारिका बनकर तुम्हें नहीं रहना है
क्योंकि तुम्हारा सौन्दर्य
यौन के अलंकार में नहीं
व्यक्तित्व के सहज उभार में है
मानव स्वाधीनता के श्रंगार में है। ''[9]

उक्त पंक्तियों में कवि नायिकाओं को लक्ष्य बनाते हैं। वे कहते हैं, आधुनिककाल, रीतिकाल, मध्यकाल में नारि को भोग्या ही समझा है पर आज समय के साथ सबकुछ बदल गया है। आज तुम पुरूषों से भी महान बन गई हो समाज के कल्याण में तुम्हारा ही यशोगान है।

''मुझमें एक आदमी है
और सब आदमियों में हूँ मैं
मैं जिनके संदर्भ मं सत्ताशील हूँ
वह सब मेरे संदर्भ में रहते हैं,
मेरे संदर्भ उनके हो जाते हं
और मैं उन सबका संदर्भ बन जाता हूँ। ''[10]

'एक आदमी जो मुझमें' कविता में कवि उन सभी को महत्त्व देते हैं, जो उनके जीवन में महत्त्व रखते हैं। वे कहते हैं एक साधारण मनुष्य भी महत्त्व और मान पाकर विशिष्ट बन जाता है।

''उनकी औरतों को नंगा किया गया है
और उनके बच्चों को बेच दिया गया है
उनको खरीद लिया गया है
उनकी जबान बंद कर दी गई है
काटी नहीं गई ?
जनतंत्र में ज़बान काटी नहीं बंद की जाती है
अब लोग कह नहीं सकते कि उनके ज़बान नहीं हैं
वे आजाद हैं –
क्योंकि वे आज़ाद रहकर भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ते
सिर्फ प्रशस्ति गान गाते हैं,
इन लोगों की सभाओं में बड़ी संख्या में आते हैं। ''[11]

'कतार में खड़े लोग' कविता में मिश्रजी ने समाज का ध्यान मजदूर एवं गरीबों की ओर केन्द्रित किया है। सत्ताधारियों पर करारा व्यंग्य किया है। किस प्रकार मजदूर एवं गरीब वर्ग के लोगों को अन्याय का सामना करना पड़ता है, उनकी महिलाओं के साथ यौन शोषण किया जाता है। उनके बच्चों का सौदा करना तो एक आमबात हो गई है। उन्हें केवल नारा लगाने का अधिकार है। शोषण के विरूद्ध लड़ने का कोई अधिकार नहीं है।

''कितने भले हैं लोग
जो अब राशन नहीं कफन माँगते हैं
और कितने समझदार हैं लोग

वही माँगते हैं जो उन्हें मिल सकता है
वे लोग भी कितने अच्छे हैं
जिन्होंने इन लोगों के कफन का इंतजाम कर दिया है। ''[12]

'कतार में खड़े लोग' कविता में कवि ने गरीबों की दयनीय दशा पर करारा व्यंग्य किया है। बढ़ती मँहगाई के इस दौर में आज का गरीब राशन खरीदने के बदले मृत्यु को गले लगाना अच्छा मानता है। अब एक मौत ही ऐसी है, जो माँगने स सरलता से मिल जाती है। साथ ही वे उन दानदाताओं को धन्यवाद देना चाहते हैं, जो उनके लिए (कफ़न) या अंत समय में अर्थी को पहनाने वाले कपड़ों की व्यवस्था कर देते हैं।

''नहीं बची है उम्मीद लोगों को
जो दिन–रात कुर्सियों के लिए
लोगों को चिंतायें बताते हैं,
सड़कों पर उनके दुख भरे चेहरे
अपने आवासीय महलों में
खुश होकर गाते हैं;
सत्ता का अपहरण कर
जनहित के नाम पर जश्न मनाते हैं। ''[13]

'अँधेरे में' कविता में मिश्रजी ने राजनीतिज्ञ पर करारा व्यंग्य किया है ये राजनीतिज्ञ विकास के बहाने अपना ही विकास कर रहे हैं। सड़कों पर जनता के बीच चिंतित व दुखी होने का बहाना करते हैं और अपनी हवेली में गरीब लोगों का मजाक बनाते हुए पार्टी करते हैं।

निष्कर्ष

'अधूरी यात्राएँ' कविताओं के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि, इन रचनाओं में मानव मन की स्थिति, सामाजिक जीवन में बदलते परिवेश, उनसे जुड़ी जन–मानस की सोच और मनुष्य को उनके कर्त्तव्यों से अवगत कराया है। साथ ही निर्धन वर्ग, मजदूर वर्ग, राजनीतिज्ञ, कलियुगी संतान, साधारण मनुष्य की समस्या, नायिका जैसे विषयों पर गहन चिंतन व्यक्त किया है। इनकी रचनाएँ राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत है। कवि ने कविताओं को यात्राओं की उपमा दी है, इनकी कविताएँ किसी समस्या का निराकरण तो नहीं करती, किन्तु वह मनुष्य की अंतरात्मा को झकझोरती है और व्यक्ति को अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। मानव का जीवन यात्राओं का एक वर्तमान है, जो समय की महत्ता को ज्ञात कराता है।
अतः कहा जा सकता है कि, 'अधूरी यात्राएँ' समकालीन रचनाओं में मिश्रजी की अपनी एक अलग ही पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः जमीन ही बने रहते, पृष्ठ–14
2. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः परिवेश के बीच, पृष्ठ–55
3. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः कतार में खड़े लोग, पृष्ठ–62
4. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँ: इक्कीसवीं सदी, पृष्ठ–68
5. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः आभार, पृष्ठ–58
6. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः अपनों के बीच, पृष्ठ–25
7. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः खोई हुई पहचान, पृष्ठ–12
8. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः स्नायुव्यतिक्रम, पृष्ठ–45
9. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः नया मिलन, पृष्ठ–32
10. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः एक आदमी जो मुझमें, पृष्ठ–51
11. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः कतार में खड़े लोग, पृष्ठ–63
12. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः कतार में खड़े लोग, पृष्ठ–65
13. डॉ. राजेन्द्र मिश्रः अधूरी यात्राएँः अँधेरे में, पृष्ठ–74